Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

मार्कण्डेय के कथा–साहित्य में प्रतिबिंबित ग्रामीण धार्मिक जीवन में विविध अंधविश्वास

डॉ0 ममता मिश्रा
शोध–निर्देशिका
एसोसिएट प्रोफेसर–विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मा0वि0वि0), प्रयागराज

दिलीप कुमार वर्मा
शोध–छात्र,हिन्दी,
हिन्दी विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज

सारांश– अज्ञान और अशिक्षा के कारण ग्रामीण जीवन में तरह–तरह के अंधविश्वास फैले रहते हैं। उनका प्रभाव ग्रामीणों के आचार–विचार, जीवन–दर्शन, विश्वास, संस्कृति और व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखाई देता है। मार्कण्डेय ने ग्रामीण अंधविश्वास के विविध रूपों का अंकन किया है। मार्कण्डेय के कथा–साहित्य में भूत–प्रेत और चुड़ैल सम्बन्धी मान्यताएँ, भूत–प्रेत और चुड़ैल सम्बन्धी मान्यताएँ, शुभ–अशुभ का विचार, शकुन–अपशकुन का विचार, प्राकृतिक व्यापारों में अंधविश्वास, नैतिक विश्वास, शुभ–अशुभ का विचार, शकुन–अपशकुन का विचार, प्राकृतिक व्यापारों में अंधविश्वास, नैतिक विश्वासयह वृत्ति उनके अनेक पात्रों में दृष्टिगत होती है।

मुख्य शब्द– कथा–साहित्य, प्रतिबिम्बित, ग्रामीण, धार्मिक जीवन, अंधविश्वास।

अज्ञान और अशिक्षा के कारण ग्रामीण जीवन में तरह–तरह के अंधविश्वास फैले रहते हैं। उनका प्रभाव ग्रामीणों के आचार–विचार, जीवन–दर्शन, विश्वास, संस्कृति और व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखाई देता है। मार्कण्डेय ने ग्रामीण अंधविश्वास के विविध रूपों का अंकन किया है।

भूत–प्रेत और चुड़ैल सम्बन्धी मान्यताएँ–

गाँव के बहुत से लोग भूत प्रेतों में विश्वास करते हैं और उनसे बचने के लिए अथवा और उनको भगाने के लिए तरह–तरह के कर्मकाण्ड किये जाते हैं। आमतौर से गाँव में कभी किसी स्त्री या पुरुष की असमय या किसी दुर्घटना से मृत्यु हो जाती है अथवा किसी ने आत्महत्या की होती है या किसी का कत्ल किया जाता है तो ऐसा माना जाता है कि उस व्यक्ति की आत्मा अशांत रहती है जो किसी न किसी रूप में गाँव में घूमती रहती है। गाँव में प्रायः धारणा भी बनी रहती है कि पुरुषों की आत्मा भूत–प्रेत और स्त्रियों की आत्मा चुड़ैल बन जाती है। 'नीम की टहनी' कहानी के प्रारम्भ में ही मार्कण्डेय गाँव के भयावह वातावरण को

प्रस्तुत करते हैं– ''सूरज डूबते ही, सारा गाँव डाइनों के काले लहँगे में उलझ कर बेहोश हो जाता है। हवा का झोंका अपनी खूँखार अंगुलियों से, खपरैल के घरों तथा फूल की झोपड़ियों को रह–रहकर झूलता हैं, और वे दुबक कर, एक भयानक खामोशी में डूब जाती है।''[1] इससे रात के अँधेरे में भूत–प्रेतों के संचारन का स्पष्ट आभास हो जाता है।

बहुधा भूत–प्रेत और चुड़ैल किसी पेड़ पर, मरघट में तथा तालाब या नदी के किनारे पर रहते माने जाते हैं। मार्कण्डेय की शव–साधना कहानी में डायनों का वर्णन मिलता है– ''बाबा रात को चुड़इनियों के तालाब के ऊपर पलत्थी मारकर बैठ जाते हैं और डाइने उनके पाँव पखारती है।''[2] बाबा के अलावा किसी को उधर झाँकने की हिम्मत नहीं होती, क्योंकि गढ़ी का छोकरा घोड़ा समेत वही छड़ कर मर गया था और लोग मानते है कि डाइन उसके कलेजे का खून चूस कर पी गई थी। इससे ज्ञात होता है कि गाँव के लोग भूत–प्रेतों के कारनामों पर विश्वास करते हैं। घूरे बाबा शव–साधना के लिए रात को उसी तालाब के किनारे पर जाते हैं– 'सूरज डूबते ही डाकिनी का आह्वान होता है और धेचूँ आसमान की ओर मुँह उठाकर जोर से तुरही फूँकता है। लोग सन्न हो जाते हैं। डर के मारे औरतें काँपती, अपने बच्चों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है।''[3] प्रस्तुत अवतरण से ग्राम जीवन में रूढ़ चुड़ैल सम्बन्धी अंधविश्वास स्पष्ट परिलक्षित होता है।

'अग्निबीज' उपन्यास में भी चुड़ैल सम्बन्धी धारणा का चित्रण मिलता है। गाँव के लोग यह मानते हैं कि बजमा के किनारे पर चुड़ैल का संचार रहता है। गाँव के आश्रम जाने के लिए बजमा नदी को पार करना पड़ता है। एक दिन आश्रम से घर लौटने में सुनीत, श्यामा और मुराद को देर हो जाती है और रास्ते में ही अँधेरा हो जाता है। बरसात के दिन होने के कारण नदी में पानी बढ़ गया था और ररात के अँधेरे में नदी को पार करना खतरा मोल लेना लग रहा था। इसलिए मुराद भींट, पर से पानी को एक तरफ छोड़कर खेत–खेत निकलने का प्रस्ताव रखता है किन्तु श्यामा को चुड़ैल का डर लगता है। अपनी आशंका व्यक्त करते हुए वह मुराद से कहती है– 'ना–ना, भइया! लोग कहते हैं कि भिटवा पर चुरइने शाम से ही उतर आती हैं और तेल–फुलेल लगाकर, सिंगार पटार करन लगती हैं।''[4] उक्त संदर्भ में विदित होता है कि भूत–प्रेत और चुडैल सम्बन्धी विश्वास ग्राम जीवन में परम्परा से प्रचलित हैं। गाँव के लोग परम्परा प्रिय होने के कारण पुरानी मान्यताओं में विश्वास करते हैं।

शुभ–अशुभ का विचार–

ग्रामीण धर्म में शुभ–अशुभ के बारें में अनेक अंधविश्वास पाये जाते हैं। किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए विशेष दिन और विशिष्ट समय शुभ माना जाता है। गाँव में पंडित लोग शुभ–अशुभ का मुहूर्त निकालने का कार्य करते हैं। मार्कण्डेय ने ग्राम जीवन में प्रचलित शुभ–अशुभ की धारणा का भी चित्रण किया है। उनकी 'सहज और शुभ' कहानी ग्राम जीव में स्थित शुभ–अशुभ के विचारों को स्पष्ट करती है। हमारे यहाँ किसी विशिष्ट पशु–पक्षियों का दिखाई देना शुभ तथा अशुभ माना जाता है। तोता को इसलिए पाला जाता है क्योंकि वह सुबह उठते ही सीता राम सीताराम पढ़ता है। नीलकंठ को प्रणाम इसलिए किया जाता है कि वह शंकर की याद दिलाता है। इसके पीछे हमारी धार्मिक भावना महत्वपूर्ण रहती है। प्रस्तुत कहानी में

मार्कण्डेय लिखते हैं– ''महोप बेचारी अपनी गलती को पूत–पूत के नारे देकर दोहराती है और ररोइया की आवाज सुनना भी पाप है, लोग अशुभ मानते हैं; कोई दुखद घटना होने वाली है।''[5] इस तरह बरसात में आने वाले चपल खंजन को पहले–पहल देखने के शुभाशुभ भी निश्चित होते हैं। बुलबुल जाड़ों में कुछ लोग पालते हैं पर उसके मधुर गाने के लिए नहीं, उसे लड़ाने के लिए। इस प्रकार पक्षियों को दिखने न दिखने और उनको पालन के संदर्भ में हमारी अलग–अलग मान्यतायें होती हैं।

किसी काम पर जाते वक्त यदि कोई बिल्ली रास्ता काट जाती है तथा किसी विधवा स्त्री का दर्शन होता है तो उसे अशुभ माना जाता है। 'भूदान' कहानी में रामजतन बनसत्ती का दर्शन कर आगे निकलता है तो उस वक्त एक लोमड़ी खुर–खुर कर सत्ती के चौरे से निकलती है और पल भर को उसकी मुँह की ओर देखकर बायें से रास्ता काटती हुयी निकल जाती है तो उसके मन में एक अशुभ की कल्पना जाग उठती है। ''एक मोटी सी गाली उसकी जबान पर आ गयी और वह आगे चल पड़ा।''[6] अपनी अज्ञानी समझ के कारण रामजतन के मन में किसी अशुभ घटना की आशंका पैदा हो जाती है। जबकि ऐसी घटनायें सिर्फ संयोग से घटित हो जाती है; उसके पीछे कोई वैज्ञानिक कारण न होते हुये भी गाँव के लोग अंधश्रद्धा की वजह से उसे सच मानते हैं। मार्कण्डेय ने इस प्रकार की अनेक रूढ़िगत धारणाओं को प्रस्तुत किया हैं।

शकुन–अपशकुन का विचार–

शुभ–अशुभ के विचार के साथ गाँव जीवन में शकुन–अपशकुन का विशेष ध्यान रखा जाता है। विशेष तौर से किसी भी काम के शुरू होने के समय अपशकुन बहुत बुरा माना जाता है। यह अपशकुन अनेक प्रकार के होते हैं। यात्रा में कोई काना आदमी मिल जाता है तो उसे अपशकुन माना जाता है। घर से निकलते समय यदि छींक हो जाय तो भी वह बुरी होती है। इस प्रकार खाली घड़ा देखने में काम होने में संदेह होता है किन्तु यदि किसी कार्य के लिए घर से बाहर निकलने पर सामने से कोई सुहागिन पानी का भरा घड़ा लेकर सामने से गुजरती है तो उसे शुभ शकुन माना जाता है। मार्कण्डेय की 'कानी घोड़ी' कहानी में शकुन–अपशकुन सम्बन्धी मान्यताओं के संकेत मिलते हैं। प्रस्तुत कहानी का सरजू साव किसी सेठ के यहाँ लदवाही का काम करता था। किन्तु एक दिन सेठ की एक घोड़ी गुड के गोदाम में ही अपने बच्चे को जन्म देती है और सरजू उसी रात घोड़ी के बच्चे की एक आँख में सूजा गाड़ देता है। सरजू की बहन जोखन को बताती है– सुबह भइया ने ही सब से कहा कि घोड़ी का बच्चा काना है। यह बड़ा असगुन हुआ और माथा थामकर सेठ के सामने बैठ गये। सेठ भइया पर ही नाराज हुआ। उन्हीं की लापरवाही से घोड़ी गुड़ के मंडी में गाभिन हुई थी। इसलिए सेठ ने कहा, 'तुरन्त इस बच्चे को उठाकर अपने घर ले आओ। कही इधर–उधर किया, तो तुम्हारा काम छुड़ा दूँगा।' फिर तुम्हारे जैसे भुक्खड़ के लिए सुगन–असगुन क्या करेगा।''[7] लेकिन सेठ को क्या पता था कि सरजू, सेठ की किस्मत उसी दिन उठा लाया था। सरजू घोड़ी के उस बच्चे को अपने घर ले आता है और बड़ी हो जाने पर उस पर लदवाही कर अपना अलग व्यापार शुरू कर देता है। इस प्रकार जो कानी घोड़ी सेठ के लिए अपशकुन बन गयी थी वह सरजू के लिए शुभ शकुन बन जाती है।

ग्रामीण लाग गंड़ा–तावीज और पी–फकिरों पर भी विश्वास करते हैं। ये लोग किसी देवता के नाम की तावीज अपने गले में लटकायें रहते हैं अथवा बाँह में बाँध देते हैं। मार्कण्डेय के 'अग्निबीज' में इसका उल्लेख मिलता है। बाकर का पुत्र मुराद के गले में हमेशा तावीज लटकती रहती है। किन्तु एक दिन बजमा के पानी में भीगा हुआ मुराद अपने गले की ताबीज को मुट्ठी में लेकर अनायास ही नीचे की ओर खिंच देता है तो पुराने धागे चट–चटकर टूटकर अलग हो जाते हैं। यह देखकर बाकर चौंक पड़ता है और कहता है– ''यह क्या किया तुमने? भूरे पार के पीर की तावीज है ये। इसे देह से हटाना असुगन है, मुराद! इसमें बड़ी दुआएँ हैं।''[8] इस प्रकार तावीज को शरीर से अलग कर देना वाकर अपशकुन मानता है। असल में जिन लोगों को अपने कर्म पर भरोसा नहीं होता है वे लोग ही ऐसे पीर–फकीरों की दुआओं पर विश्वास करते हैं। गाँव के अनेक लोग ऐसे अंधविश्वासों में फँसे हुये दृष्टिगत होते हैं।

प्राकृतिक व्यापारों में अंधविश्वास–

प्राकृतिक व्यापारों के साथ भी गाँव बहुत से अंधविश्वासों से जुड़े रहते हैं। उदाहरणार्थ सूर्य और चन्द्र ग्रहण को गाँव के लोग, राहू और केतु के प्रकोप का कारण मानते हैं। इसी प्रकार वर्षा न होना, अधिक होना और असमय में होना आदि को ग्रामीण लोग भगवान का प्रकोप मानते हैं। मार्कण्डेय की 'दाना–भूसा' की कहानी की राजी अकाल की स्थिति को ईश्वर का प्रकोप मानती है और भाग्य को कोसती हुयी कहती है– ''तुम्हारी किस्मत में अब अन्न लिखा ही नहीं तो क्या वह बेचारा अन्न बन जाये। गाँव के किसके घर पेट भर भोजन हो रहा है इस ठाले में। भगवान का कोप ही तो है कि साल–साल भर मरने–जरने पर भी एक महीने का दाना–भूसा घर में नहीं आता।''[9] कहना न होगा कि नैसर्गिक आपत्तियों को गाँव के लोग देवताओं का प्रकोप समझते हैं। ग्राम–जीवन में आज भी प्राकृतिक व्यापारों से सम्बन्धित अनेक प्रकार के अंधविश्वास पाये जाते हैं।

प्राकृतिक व्यापारों के साथ ही मानवी शरीर वाह्य क्रियायें, उदाहरण– आँख फड़कना, भुजा फड़कना तथा छींक आना आदि मानवी शरीर की नैसर्गिक क्रियायें के प्रति भी गाँव के लोगों में अंधविश्वास दिखाई देता है। मार्कण्डेय के 'सेमल के फूल' उपन्यास में इसका संकेत मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका नीलिमा किसी रात सुमंगल के आने की राह देखती है तो उस वक्त मौसी के घर का नौकर, मंटू नीलिमा के कमरे में आ जाता है और अपने हाथ का गुलदस्ता देते हुए उसे कहता है– ''बिटिया आज आँख बहुत फड़क रही है। लगता है, सुमंगल भइया अवइयाँ है।''[10] चूँकि मंटू घर का एक अनपढ़ और बुजुर्ग नौकर है इसलिए वह इस प्रकार के प्राकृत व्यापारों का सम्बन्ध भविष्य की सूचनाओं से जोड़ देता है। आज भी गाँव के अनपढ़ लोग इस प्रकार की प्राकृतिक क्रियाओं में विश्वास करते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। मार्कण्डेय ने ग्रामीण अंधविश्वासों को बहुत बारीकी से विश्लेषित किया है।

नैतिक विश्वास–

ग्राम जीवन में नैतिकता–अनैतिकता को भी धर्म का अंग माना जाता है। प्रायः गाँव में परोपकार करना, संकट में किसी की मदद करना तथा परम्परागत आदशों का पालन करना आदि को नैतिकता मानते

हैं तो सामान्य रूप से झूठ बोलना, किसी को फँसना, चोरी करना, किसी की हत्या करना अथवा विवाह के पूर्व से यौन सम्बन्ध स्थापित करना आदि को अनैतिक माना जाता है। मार्कण्डेय की 'धूरा' नामक कहानी सामाजिक नैतिकता को उजागर करती है। प्रस्तुत कहानी की 'घूरा' गाँव के एक बनिया की मेहरारू है। वह लंबरदार को उसकी लड़की की शादी के लिए चुराकर रुपये देती हैं और सामाजिक और नैतिक दायित्व निभाती है, किन्तु जब रुपये वापस लौटाने का समय आता है तो लंबरदार पैसे देने से मुकर जाता है। लम्बरदार के इस व्यवहार से घूरा के दिल को भारी झटका लग जाता है। चूँकि रुपये उसने किसी के सामने नहीं दिये थे इसलिए उसके पास कोई सबूत भी नहीं होता– ''घूरा सिटपिटा गयी, उसकी आँखे विस्मय से भर गयी, उसका कलेजा धड़कने लगा, उसे पसीना हो आया। बटोर पंचायत? वह भी तो नहीं कर सकती थी बेचारी, उठी और कहती हुयी चली गयी, ''यही तुम्हारा दीन–धरम कहता है न, बबुआ। जाओ समझ लूँगी लड़की के कन्यादान पर दे दिया, पर तुम्हारी नियत का फल भगवान तुम्हें जरूर देंगे।''[11] यहाँ स्पष्ट होता है कि घूरा अपने पुराने संस्कारों के चलते विपत्ति के समय दूसरों की मदद कर नैतिक धर्म का पालन जरूर करती हैं, किन्तु लम्बरदार जैसे अवसरवादी एवं स्वार्थी लोग अनैतिकता का परिचय देते हैं।

नैतिक आचरण को ही गाँव के लोग धर्म मानते हैं। इसलिए अपने किसी कार्य से दूसरों को कभी दुःख न पहुँचे इसका सदा ध्यान रखा जाता है। किन्तु वर्तमान युग में बदलते सामाजिक संदर्भों के साथ ही नैतिकता के मानदण्ड भी बदल रहे हैं। मार्कण्डेय ने अपनी 'बीच के लोग' कहानी में इसे व्याख्यायित किया है। गाँव में एक ओर फाउदी दादा जैसे परम्परागत नैतिकता को मानने वाले बुजुर्ग है तो दूसरी ओर ठाकुर हरदयाल जैसे नैतिकता का उल्लंघन करने वाले लोग भी है। ठाकुर की जिस जमीन पर बुझावन सिकमी लग गया है उसे ठाकुर को वापस कर देना ही फाउदी दादा धर्म मानते हैं, इसलिए वे कहते हैं, ''यह सब अधरम की राह है बुझावन। हमारे दिल में तो यह समाता ही नहीं कि जो भूँच हमारी है, वह जब किराये पर है तो वह सिकमी कैसे लग जायेगी।''[12] कानून जरूर बुझावन के पक्ष में होता है जिसके तहत वह जमीन का हकदार हो सकता है किन्तु नैतिकता की कसौटी पर बुझावन की माँग नैतिक धर्म के विरोध में होती है। इससे जाहिर है कि गाँव के लोग कानून की अपेक्षा नैतिक नीति–नियमों को अधिक महत्व देते हैं।

'दो पैसे का नमक' एकांकी में भी मार्कण्डेय ने ग्रामीण नैतिक धर्म स्पष्ट किया है। प्रस्तुत एकांकी में मरजादी की बेटी बिट्टन, उसका प्रेमी रतन और ठाकुर का लड़का बैजू तीनों के प्रेम त्रिकोण के कारण विवाद खड़ा हो जाता है और मामला पंचायत तक पहुँच जाता है। चूँकि रतन पढ़ा–लिखा ही सही किन्तु निचली जाति का युवक है और बैजू बिट्टन का मंगेतर है। इसलिए मुखिया अपना फैसला सुनाते हुये मरजाद से कहता है– ''देखो भाई, गाँव में बहू–बेटियों की इज्जत बात का ध्यान रखना ही होगा। आज तुम्हारे घर लड़की के लिए लाठी चलेगी, कल उनके घर, परसो उनके घर..... यह सब ठीक नहीं है। तुम्हारी मरजी तो लगन पताई रखकर बैजुआ से बियाह करो। नहीं तो उसका रुपिया–पैसा देकर झंझट निपटाओ।''[13] प्रस्तुत अवतरण में मुखिया का फैसला नैतिक धर्म का पालन करता है। गाँव में सामाजिक

आचरण में दोगली प्रवृत्ति को अनैतिक माना जाता है। मार्कण्डेय नैतिक आचरण के हिमायती साहित्यकार हैं। उनकी यह वृत्ति उनके अनेक पात्रों में दृष्टिगत होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 17
2. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 292
3. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 293
4. मार्कण्डेय, अग्निबीज (उपन्यास), नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 18
5. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 437
6. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 271
7. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 444
8. मार्कण्डेय, अग्निबीज (उपन्यास), नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 26
9. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 321
10. मार्कण्डेय, सेमल के फूल (उपन्यास), नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1956, पृ0 57
11. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 36
12. मार्कण्डेय की कहानियाँ– मार्कण्डेय– लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002, पृ0 484
13. मार्कण्डेय–पत्थर और परछाइयाँ–लोक भारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण– 2002, पृ0 107